Seventeenth Loksabha

p>

Title: Request to include the composition of Unmat and other national compositions in New policy of Education.

श्री संगम लाल गुप्ता (प्रतापगढ़): सभापति महोदय, मैं मानव संसाधन मंत्री का ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूं और मैं अवधी सम्राट स्व. आद्या प्रसाद 'उन्मत्त' जी की पंक्तियां पढ़ता हूं:-

"आ गया बलिदान का, त्योहार वन्दे मातरम ।
लेखनी दिल खोलकर, ललकार वन्दे मातरम॥
बैरियों को शस्त्र की हुंकार वन्दे मातरम ।
लेखनी दिल खोलकर, ललकार वन्दे मातरम॥
कलकलाता था वतन का, प्यार वन्दे मातरम ।
लेखनी दिल खोलकर, ललकार वन्दे मातरम॥
देश द्रोही के लिए, फुफकार वन्दे मातरम ।
लेखनी दिल खोलकर, ललकार वन्दे मातरम॥
झूमते शेखर, भगत, सुखदेव जब गाते चले ।
ठोकरों से जालिमों की, रूह दहलाते चले॥
मौत से बेखौफ बांके, वीर बलखाते चले ।
आखिरी दम तक तिरंगा, केतु फहराते चले॥
देश के अस्तित्व का, संकट मिटाने के लिए ।
वह उधर देखो, उधर वह सेज है, सोना नहीं॥

बैरियों में बौखलाहट तेज है, सोना नहीं,
दुश्मनी में नींद का परहेज है, सोना नहीं,
सरहदों पर खड़ा, चंगेज है, सोना नहीं॥
घेरकर लाहौर तक बम मार वन्दे मातरम ।
लेखनी दिल खोलकर, ललकार वन्दे मातरम॥"

मान्यवर, उक्त पंक्तियों सहित राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होकर, अवधी की सामान्य भाषा में रचनाएं लिखकर युवा पीढ़ी के मन में झकझोर पैदा कर राष्ट्रवाद का संचार करने वाले मेरी लोक सभा क्षेत्र के निवासी स्व. आद्या प्रसाद 'उन्मत्त' के संबंध में बोलना चाहता हूं । मैं आपके माध्यम से माननीय मानव संसाधन मंत्री जी से मांग करता हूं कि देश में लागू होने जा रही नई शिक्षा नीति में 'उन्मत्त' जी की उक्त रचना व अन्य राष्ट्र धर्म की रचनाओं को विभिन्न पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित कराने की कृपा करें ।

HON. CHAIRPERSON: Kunwar Pushpendra Singh Chandel is permitted to associate with the issue raised by Shri Sangam Lal Gupta.